Result Mitra

UPSC (IAS) Prelims 2025

Current Affairs

18 Months

CRASH COURSE

#IAS

ABHAY SIR

Events in News

Result Mitra

1. अमृत योजना (AMRUT)
2. वैश्विक जल संसाधन स्थिति रिपोर्ट
3. राष्ट्रीय जल पुरस्कार 2024
4. CCPA ग्रीनवॉशिंग रोकथाम दिशा-निर्देश
5. शास्त्रीय भाषा (Classical Language)
6. श्री करतारपुर साहिब कॉरिडोर: एक धार्मिक और कूटनीतिक पहल

Result Mitra

अमृत

Atal Mission for Rejuvenation and Urban Transformation

अमृत योजना (AMRUT)

अमृत योजना (AMRUT)

Daily Current News

Result Mitra

प्रश्न 1: AMRUT योजना किस वर्ष शुरू की गई थी और इसके अंतर्गत कौन-से प्रमुख घटक शामिल हैं?

1. यह योजना 2015 में शुरू की गई थी।
2. इसमें शहरी परिवहन और हरित क्षेत्र विकास भी शामिल हैं।
3. इसका संचालन जल शक्ति मंत्रालय करता है।

A. केवल 1 और 2
B. केवल 2 और 3
C. केवल 1 और 3
D. सभी 1, 2 और 3

अमृत योजना (AMRUT)

Daily Current News

Result Mitra

- **1. AMRUT 1.0 (2015-2022)**
- पूरा नाम:Atal Mission for Rejuvenation and Urban Transformation
- शुरुआत: 25 जून 2015 को, भारत सरकार द्वारा
- उद्देश्य: शहरी बुनियादी ढांचे को बेहतर बनाना
- जल आपूर्ति, सीवरेज, शहरी परिवहन, और हरित स्थानों में सुधार
- गरीबों और वंचितों को शहरी सुविधाएं उपलब्ध कराना

- **मुख्य घटक:**
- हर घर को नल से जल
- सीवरेज नेटवर्क और शोधन
- गैर-मोटर चालित शहरी परिवहन (जैसे साइकिल ट्रैक)
- हरित स्थानों का विकास
- **शासन सुधार (e-Governance)**
- लाभार्थी शहर :500 से अधिक शहर जिनकी आबादी 1 लाख से अधिक थी

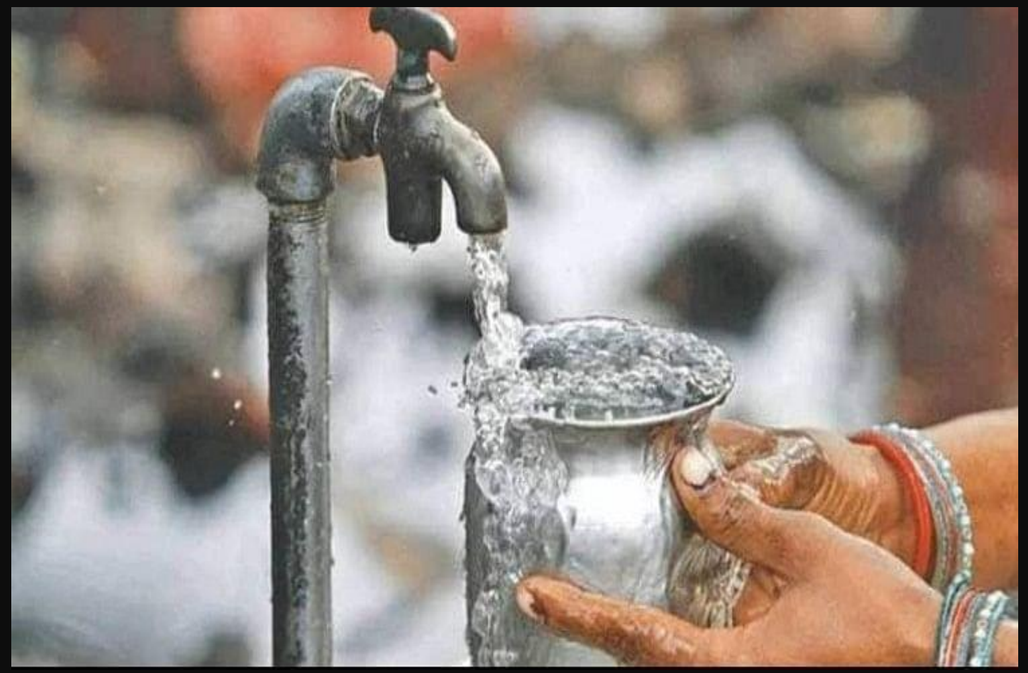

- **2. AMRUT 2.0 (2021-2026)**
- शुरुआत: 1 अक्टूबर 2021 को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा
- विज़न: "हर घर जल": 100% घरों को नल कनेक्शन
- 100% सीवरेज और सेप्टेज प्रबंधन
- शहरी जल निकायों का संरक्षण और पुनर्जीवन
- हरित क्षेत्रों और पाक का विकास
- तकनीकी नवाचार और PPP मॉडल का उपयोग

- **बजट आवंटन:**
- ₹2.99 लाख करोड़ (2021-26), जिसमें केंद्र सरकार का हिस्सा ₹76,760 करोड़
- प्रमुख परिवर्तन (AMRUT 1.0 बनाम AMRUT 2.0):

बिंदु	AMRUT 1.0	AMRUT 2.0
उद्देश्य	बुनियादी सुविधाओं का विस्तार	सार्वभौमिक जल और सीवरेज कवरेज
दृष्टिकोण	परियोजना आधारित	प्रणाली आधारित
तकनीक	सीमित	स्मार्ट समाधान, डेटा आधारित योजना
भागीदारी	केंद्र और राज्य	PPP और तकनीकी साझेदारी

अमृत योजना (AMRUT)

Daily Current News

Result Mitra

प्रश्न 1: AMRUT योजना किस वर्ष शुरू की गई थी और इसके अंतर्गत कौन-से प्रमुख घटक शामिल हैं?

1. यह योजना 2015 में शुरू की गई थी।
2. इसमें शहरी परिवहन और हरित क्षेत्र विकास भी शामिल हैं।
3. इसका संचालन जल शक्ति मंत्रालय करता है।

A. केवल 1 और 2
B. केवल 2 और 3
C. केवल 1 और 3
D. सभी 1, 2 और 3

उत्तर: A. केवल 1 और 2

स्पष्टीकरण:

• कथन 1 सही है - AMRUT योजना 2015 में शुरू हुई थी।

• कथन 2 सही है यह योजना शहरी परिवहन, हरित क्षेत्र, जल और सीवरेज जैसे घटकों को कवर करती है।

• कथन 3 गलत है इसका संचालन आवास और शहरी कार्य मंत्रालय (MoHUA) करता है, जल शक्ति मंत्रालय नहीं।

Result Mitra
State of Global Water Resources Report
वैश्विक जल संसाधन स्थिति रिपोर्ट

- **वैश्विक जल संसाधन स्थिति रिपोर्ट – 2023**
- **जारी करने वाला संगठन:**
- विश्व मौसम विज्ञान संगठन (WMO) – संयुक्त राष्ट्र की एक विशेष एजेंसी, जो मौसम विज्ञान, जलवायु विज्ञान, जलविज्ञान और संबंधित पर्यावरणीय क्षेत्रों में अंतरराष्ट्रीय सहयोग को बढ़ावा देती है।

WORLD METEOROLOGICAL ORGANIZATION

- **मुख्य निष्कर्ष (Highlights):**
- **1. जलवायु परिवर्तन और गर्मी का असर:** 2023 अब तक का सबसे गर्म वर्ष रहा।
- अत्यधिक गर्मी और असामान्य मौसम ने जल संसाधनों को गंभीर रूप से प्रभावित किया।
- **2. नदियों की स्थिति**: 2023 पिछले 33 वष में नदियों के लिए सबसे शुष्क वर्ष रहा।
- कई बड़ी नदियों में जल स्तर सामान्य से नीचे रहा, जिससे पीने के पानी, कृषि और बिजली उत्पादन पर असर पड़ा।

- **3. मृदा की नमी (Soil Moisture):** विश्व के बड़े भू-भागों में मृदा की नमी सामान्य से काफी कम रही।
- इसका असर सीधे फसल उत्पादन और पारिस्थितिकी तंत्र पर पड़ा।
- **4. झीलों और जलाशयों की स्थिति:** अमेज़न क्षेत्र की कोबरी झील में जल स्तर बहुत नीचे चला गया।
- इसका परिणाम यह हुआ कि झील का तापमान तेजी से बढ़ गया, जिससे जलीय जीवन प्रभावित हुआ।

- **5. ग्लेशियरों की हालत:** पिछले 50 वष में ग्लेशियरों का सबसे तेज़ पिघलाव 2023 में देखा गया।
- इससे समुद्र तल में वृद्धि, मीठे पानी की आपूर्ति में कमी, और प्राकृतिक आपदाओं की आशंका बढ़ी।
- **रिपोर्ट का महत्व:**
- यह रिपोर्ट हमें बताती है कि जल संसाधन किस तरह से जलवायु परिवर्तन के कारण संकट में हैं।
- यह नीति निर्माताओं और सरकारों को सतर्क करती है कि समय रहते जल संरक्षण, जलवायु अनुकूलन, और सतत जल प्रबंधन की योजनाएं बनाएं।

Result Mitra
NATIONAL
WATER AWARDS
Share your innovative approach towards water
राष्ट्रीय जल पुरस्कार 2024

प्रश्न 1: राष्ट्रीय जल मिशन के निम्नलिखित में से कौन-से उद्देश्य हैं?

1. जल उपयोग दक्षता में 20% तक सुधार
2. सभी के लिए मुफ्त जल आपूर्ति सुनिश्चित करना
3. जलवायु परिवर्तन के प्रभाव से जल संसाधनों को अनुकूल बनाना

A. केवल 1 और 2
B. केवल 1 और 3
C. केवल 2 और 3
D. सभी 1, 2 और 3

राष्ट्रीय जल पुरस्कार 2024

Daily Current News

Result Mitra

- **राष्ट्रीय जल पुरस्कार 2024 –**
- **प्रस्तुति:** भारत की राष्ट्रपति द्वारा, नई दिल्ली में
- **आयोजक मंत्रालय:** जल शक्ति मंत्रालय, भारत सरकार
- शुरुआत वर्ष: 2018
- **मूल उद्देश्य:** जल संरक्षण और प्रबंधन के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने वालों को सम्मानित करनालोगों में जल की महत्ता के प्रति जागरूकता बढ़ाना
- सर्वोत्तम जल उपयोग प्रथाओं को अपनाने के लिए प्रेरित करना

- **पुरस्कार की श्रेणियाँ (Total 9 Categories):**
- 1. सर्वश्रेष्ठ राज्य (Best State)
- 2. सर्वश्रेष्ठ जिला (Best District)
- 3. सर्वश्रेष्ठ ग्राम पंचायत (Best Gram Panchayat)
- 4. सर्वश्रेष्ठ शहरी स्थानीय निकाय (Best Urban Local Body - ULB)
- 5. सर्वश्रेष्ठ स्कूल / कॉलेज
- 6. सर्वश्रेष्ठ उद्योग (Best Industry)
- 7. सर्वश्रेष्ठ जल उपयोगकर्ता संघ (Water User Association)
- 8. सर्वश्रेष्ठ संस्थान (स्कूल/कॉलेज के अलावा)
- 9. सर्वश्रेष्ठ नागरिक समाज (Best Civil Society Organization)

राष्ट्रीय जल पुरस्कार 2024

Daily Current News

- **2024 के प्रमुख विजेता:**
- सर्वश्रेष्ठ राज्य: ओडिशा
- जल संरक्षण, पुनर्भरण, और जल प्रबंधन में अभिनव प्रयासों के लिए
- सर्वश्रेष्ठ शहरी स्थानीय निकाय (ULB): सूरत, गुजरात

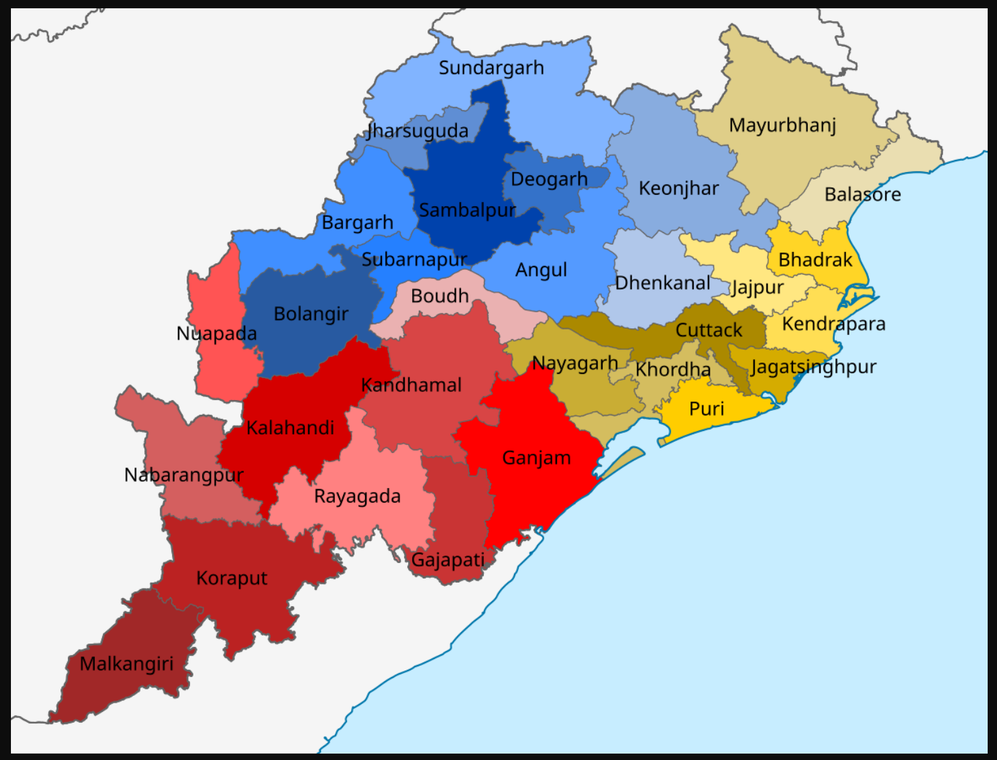

- **महत्वपूर्ण तथ्य (One-liners for MCQs):**
- राष्ट्रीय जल पुरस्कार की शुरुआत 2018 में हुई थी।
- इसका उद्देश्य स्थानीय और राष्ट्रीय स्तर पर जल संरक्षण के सर्वोत्तम प्रयासों को पहचानना है।
- 2024 में ओडिशा को सर्वश्रेष्ठ राज्य और सूरत (गुजरात) को सर्वश्रेष्ठ ULB घोषित किया गया।
- पुरस्कार जल शक्ति मंत्रालय द्वारा प्रदान किए जाते हैं।

जल शक्ति मंत्रालय
MINISTRY OF
JAL SHAKTI
सत्यमेव जयते

प्रश्न 1: राष्ट्रीय जल मिशन के निम्नलिखित में से कौन-से उद्देश्य हैं?

1. जल उपयोग दक्षता में 20% तक सुधार
2. सभी के लिए मुफ्त जल आपूर्ति सुनिश्चित करना
3. जलवायु परिवर्तन के प्रभाव से जल संसाधनों को अनुकूल बनाना

A. केवल 1 और 2
B. केवल 1 और 3
C. केवल 2 और 3
D. सभी 1, 2 और 3

उत्तर: B. केवल 1 और 3
स्पष्टीकरण:
• मिशन का उद्देश्य जल उपयोग दक्षता में 20% तक सुधार और जलवायु परिवर्तन के प्रभाव को संबोधित करना है।
• मुफ्त जल आपूर्ति इर यह राज्य सरकारों की ना... का उद्देश्य नहीं है, बल्कि सकती है।

CCPA ग्रीनवॉशिंग रोकथाम दिशा-निर्देश

- **CCPA ग्रीनवॉशिंग रोकथाम दिशा-निर्देश – 2024**
- जारीकर्ता: केंद्रीय उपभोक्ता संरक्षण प्राधिकरण (Central Consumer Protection Authority – CCPA)
- **उद्देश्य:**
- उपभोक्ताओं को भ्रामक "हरित" (Green/eco-friendly) दावों से बचाना और पारदर्शिता को बढ़ावा देना।

- **ग्रीनवाशिंग क्या है?**
- ग्रीनवॉशिंग (Greenwashing) का आशय ऐसी गुमराह करने वाली गतिविधियों या विज्ञापनों से है, जिनमें उत्पाद या सेवा को "पर्यावरण के अनुकूल" बताकर झूठा या भ्रमित करने वाला दावा किया जाता है, जबकि उसके पीछे ठोस प्रमाण नहीं होता।
- **उदाहरण:**
- ऐसा दावा करना कि पैकेजिंग बायोडिग्रेडेबल है, लेकिन इसका प्रमाण न देना।केवल उत्पाद के एक छोटे भाग को "इको-फ्रेंडली" बता कर पूरे उत्पाद को "ग्रीन" घोषित करना।

- **मुख्य दिशा-निर्देश:**
- **1. स्पष्ट परिभाषा और पारदर्शिता:** पर्यावरणीय दावों में सटीक, स्पष्ट और सत्यापनीय भाषा का उपयोग अनिवार्य।
- तकनीकी शब्द जैसे EIA (Environmental Impact Assessment) आदि के अर्थ भी बताए जाने चाहिए।
- **2. दावों का प्रमाण और सत्यापन:** किसी भी हरित दावे को स्वतंत्र अध्ययन या थर्ड-पार्टी प्रमाणन द्वारा समर्थित किया जाना चाहिए।
- यह डेटा सार्वजनिक रूप से सुलभ (publicly accessible) होना चाहिए।

- **3. स्पष्ट खुलासे (Disclosures):** यह बताना अनिवार्य होगा कि दावा किस पर लागू है:
- पूरा उत्पाद,उसका कोई विशिष्ट भाग,पैकेजिंग या विनिर्माण प्रक्रिया।
- सभी दावों को सीधे या QR कोड/वेब लिंक जैसी तकनीक से सत्यापित किया जा सके – यह सुविधा होनी चाहिए।
- केवल चुनिंदा सकारात्मक आंकड़ों को दिखाकर गुमराह नहीं किया जा सकता।

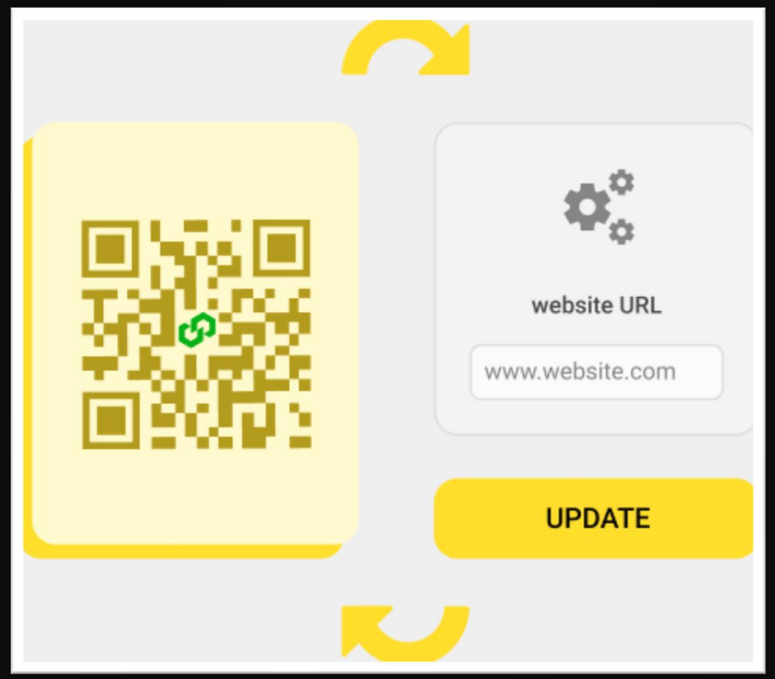

- **4. आकांक्षी और भविष्य केंद्रित दावे (Forward-looking Claims):**
- यदि कोई ब्रांड भविष्य में "ग्रीन" बनने का दावा करता है, तो उसे ठोस योजना,समय सीमा, और कार्रवाई योग्य कदम स्पष्ट रूप से बताने होंगे।
- **5. किन-किन पर लागू होंगे ये दिशा-निर्देश?**
- ये निम्नलिखित सभी पर लागू होंगे:उत्पाद निर्माता
- सेवा प्रदाता विक्रेता/वितरक विज्ञापन एजेंसी या प्रमोटर कोई भी व्यक्ति या संस्था जो "इको-फ्रेंडली" दावा करती है

- **UPSC उपयोगी One-liners:**
- CCPA की स्थापना Consumer Protection Act, 2019 के अंतर्गत की गई।
- ग्रीनवॉशिंग दिशा-निर्देश भ्रामक विज्ञापन रोकथाम दिशा-निर्देश, 2022 की अगली कड़ी हैं।
- दावों में पारदर्शिता और सत्यापन सुनिश्चित करना अनिवार्य है।

शास्त्रीय भाषा (Classical Language)

समाचार में क्यों?

- हाल ही में केंद्रीय मंत्रिमंडल ने निम्नलिखित भाषाओं को शास्त्रीय भाषा का दर्जा देने को मंजूरी दी है:

- मराठी (महाराष्ट्र)
- पाली और प्राकृत (बिहार, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश)
- असमिया (असम)
- बंगाली (पश्चिम बंगाल)

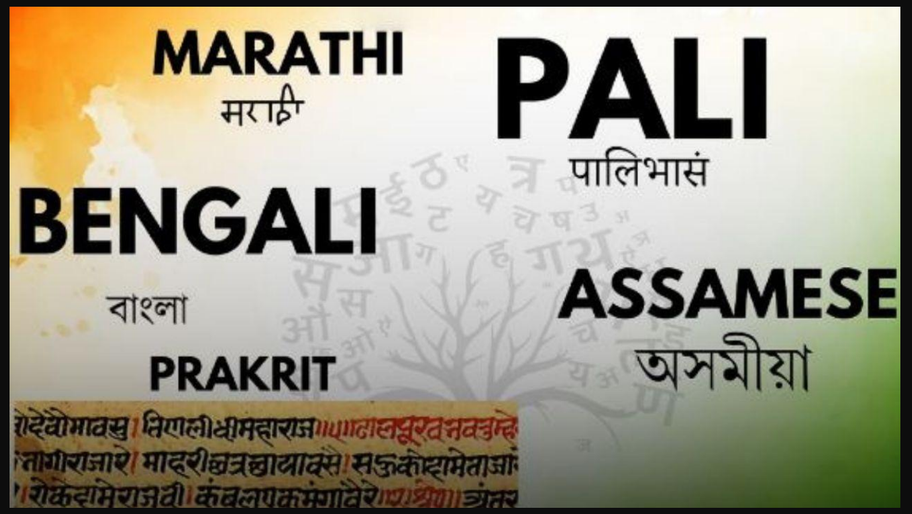

शास्त्रीय भाषा की संकल्पना:

- शास्त्रीय भाषाएं भारत की प्राचीन सांस्कृतिक और साहित्यिक विरासत को संजोकर रखने वाली भाषाएं हैं। ये भाषाएं अपने समुदाय के ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और बौद्धिक विकास को दर्शाती हैं।
- भारत सरकार ने वर्ष 2004 में पहली बार "शास्त्रीय भाषा" की एक नई श्रेणी की शुरुआत की थी।

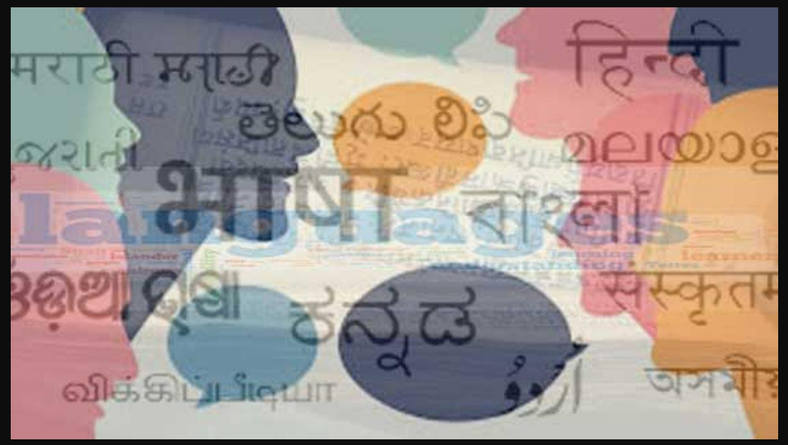

मानदंड (2005 के संशोधित मानदंड):

- किसी भाषा को शास्त्रीय दर्जा देने के लिए निम्नलिखित मानदंड निर्धारित किए गए हैं:
- 1. प्राचीन ग्रंथों की उपलब्धता: भाषा के अति-प्राचीन ग्रंथ मौजूद होने चाहिए।

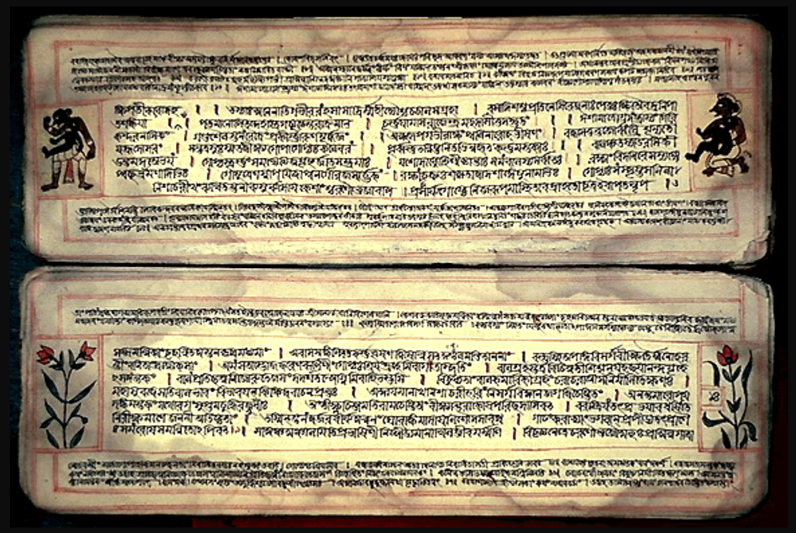

- **2. लंबा अभिलेखित इतिहास:** कम से कम 1500–2000 वष का अभिलेखित इतिहास होना चाहिए।
- **3. साहित्यिक विरासत:** इस भाषा में समृद्ध प्राचीन साहित्य का संग्रह होना चाहिए, जिसे कई पीढ़ियों ने अपनी विरासत के रूप में स्वीकार किया हो।
- **4. भिन्नता की स्वीकृति:** शाखीय भाषाएं अपने मूल स्वरूप से भिन्न हो सकती हैं।

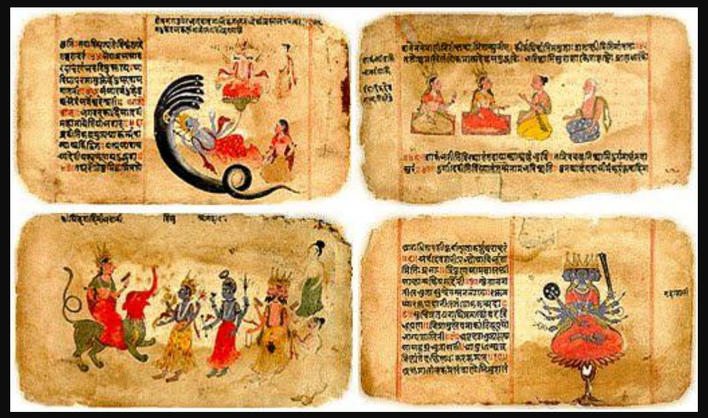

हालिया बदलाव (2024):

- 'मौलिक साहित्यिक परंपरा' का मानदंड हटा दिया गया है।
- विशेषज्ञ समिति के अनुसार, सभी प्राचीन भाषाएं एक-दूसरे से प्रभावित रही हैं, अत: मौलिकता को प्रमाणित करना व्यावहारिक नहीं है।

अब तक शास्त्रीय दर्जा प्राप्त भाषाएं:

- 1. तमिल (2004)
- 2. संस्कृत (2005)
- 3. तेलुगु (2008)
- 4. कन्नड़ (2008)
- 5. मलयालम (2013)
- 6. उड़िया (2014)

महत्वपूर्ण तथ्य:

- सभी शास्त्रीय भाषाएं संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल हैं।
- भाषा को शास्त्रीय दर्जा मिलने पर केंद्र सरकार संबंधित भाषा के अध्ययन और प्रचार-प्रसार हेतु वित्तीय सहायता प्रदान करती है।

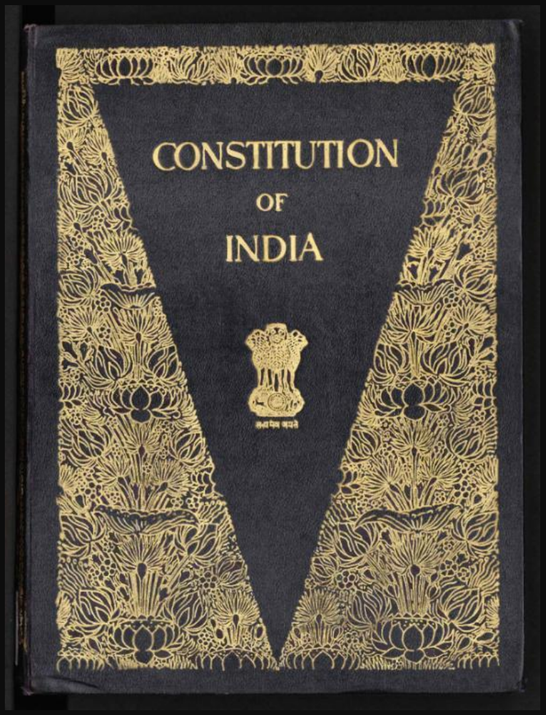

नई शाखीय भाषाएँ और उनका शास्त्रीय भाषा के रूप में महत्व

1. प्राकृत भाषा:

- प्राकृत भाषाएँ इंडो-आर्यन भाषाओं के अंतर्गत आती हैं।
- संस्कृत जहाँ अभिजात वर्ग की भाषा थी, वहीं प्राकृत जनसामान्य की भाषा थी।
- यह कई क्षेत्रीय बोलियों का समूह थी, जिनमें साहित्यिक ग्रंथों की रचना भी की गई।

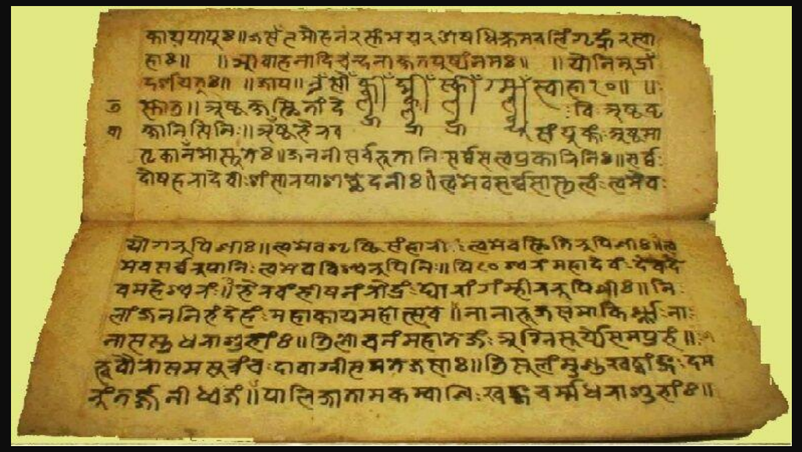

- अशोक के शिलालेख, गुप्तकाल से पूर्व की राजकीय घोषणाएँ मुख्यत: प्राकृत में थीं।
- कालांतर में, प्राकृत का मानकीकरण हुआ और स्थानीय स्वरूपों में कमी आई।

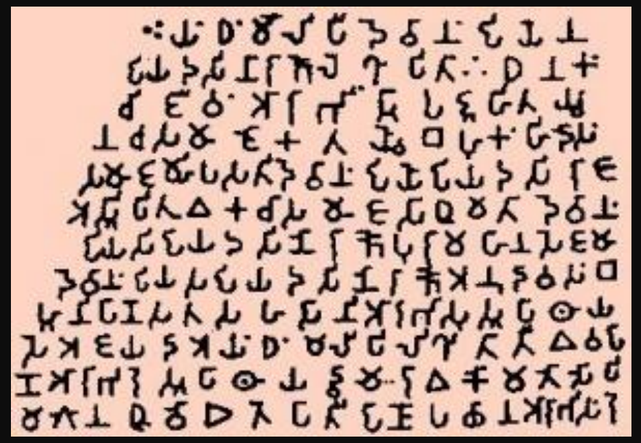

2. पालि भाषा:

- पारंपरिक रूप से इसे मागधी प्राकृत से जोड़ा जाता है।
- थेरवाद बौद्ध परंपरा की प्रमुख भाषा है।

- त्रिपिटक, बौद्ध धर्मग्रंथों का संग्रह, पालि में संकलित है:
- **विनय पिटक –** बौद्ध संघ के अनुशासन नियम।
- **सुत्त पिटक –** बुद्ध के उपदेश और धार्मिक कविताएँ।
- **अभिधम्म पिटक –** बौद्ध दर्शन का विश्लेषणात्मक भाग।

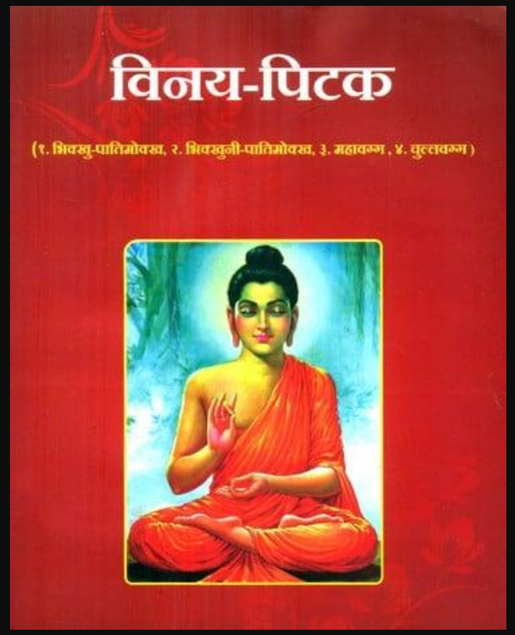

3. मराठी भाषा:

- यह भी इंडो-आर्यन भाषा है, जिसकी उत्पत्ति महाराष्ट्री प्राकृत से मानी जाती है।
- सातवाहन काल में महाराष्ट्री प्राकृत राजकीय भाषा थी।
- मराठी भाषा का प्रारंभिक प्रमाण 739 ई. के सतारा शिलालेख से मिलता है।

4. बंगाली और असमिया:

- इन दोनों भाषाओं की जड़ें मागधी प्राकृत में हैं।
- मागधी प्राकृत, प्राचीन मगध क्षेत्र की प्रमुख भाषा थी और दरबारी काय में प्रयुक्त होती थी।

शास्त्रीय भाषा दर्जा मिलने के लाभ

1. वित्तीय सहायता:

- संबंधित भाषा के अध्ययन, शोध और विकास हेतु केंद्र सरकार द्वारा सहायता दी जाती है।
- अकादमिक संस्थानों को शोध काय को बढ़ावा मिलता है।

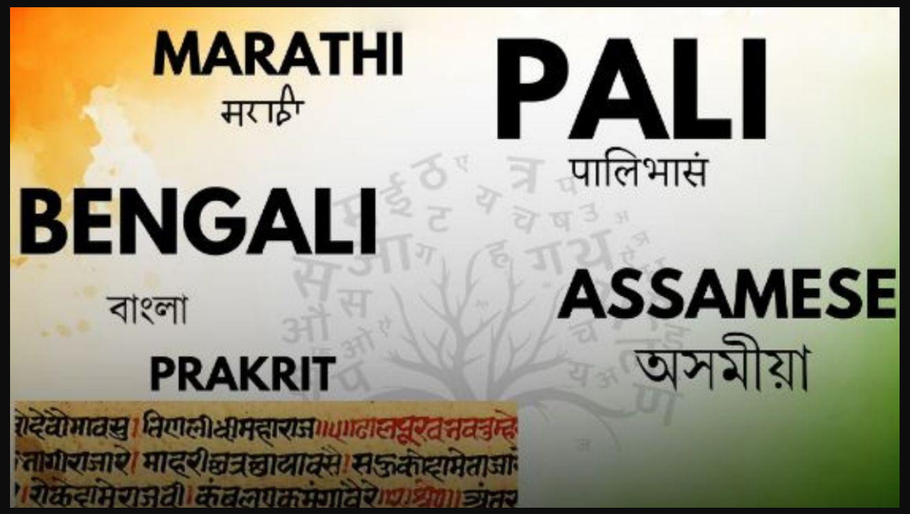

2. संरक्षण और डिजिटलीकरण:

- प्राचीन ग्रंथों और पांडुलिपियों के दस्तावेज़ीकरण व डिजिटलीकरण में सहायता मिलती है।
- भावी पीढ़ियों के लिए भाषा-साहित्य को संरक्षित रखा जा सकता है।

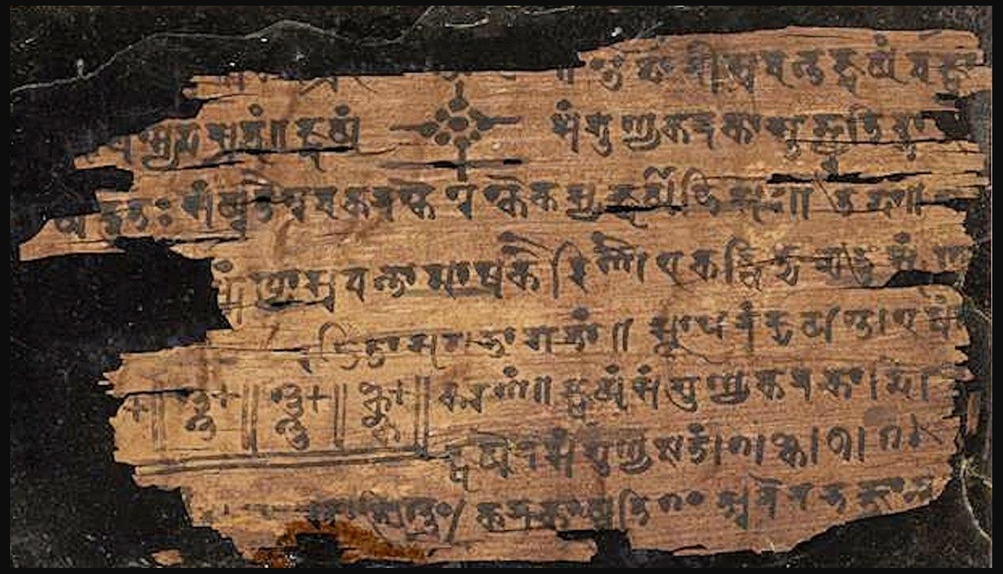

3. सांस्कृतिक पहचान:

- भाषाई गौरव में वृद्धि होती है।
- समुदाय विशेष की सांस्कृतिक पहचान सशक्त होती है और जागरूकता बढ़ती है।

4. रोजगार के अवसर:

- भाषा के अनुवाद, प्रकाशन, संरक्षण, डिजिटलीकरण आदि क्षेत्रों में रोजगार की संभावनाएँ उत्पन्न होती हैं।
- संग्रहालय, डिजिटल आर्काइव्स, रिसर्च संस्थान आदि में कार्य अवसर बढ़ते हैं।

प्राकृत भाषा के अन्य रूप

- **अर्धमागधी प्राकृत:** यह प्राचीन मगध साम्राज्य (आधुनिक विहार) और मौर्य साम्राज्य में बोली जाती थी।
- भगवान महावीर का जन्म मगध में हुआ था। सबसे प्रारंभिक जैन ग्रंथ अर्धमागधी में निखे गए थे।
- **शौरसेनी प्राकृत:** मूल रूप से आधुनिक उत्तर प्रदेश के पश्चिमी भाग में बोली जाती थी।

- शौरसेनी भाषा विशेष रूप से महिलाओं और समाज के हाशिये बाले तबके के सम्मानित लोगों द्वारा नाटक मंचन के दौरान बोली जाती थी।
- **महाराष्ट्री:** यह उत्तर-पश्चिमी दक्कन क्षेत्र में बोली जाती थी।
- महाराष्ट्री प्राकृत साहित्यिक भाषा थी, जो विशेष रूप से गीतों की रचना के लिए उपयोग की जाती थी।

निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

- 1. भारत में छह भाषाओं को शास्त्रीय भाषा का दर्जा प्राप्त है।
- 2. किसी भाषा को शास्त्रीय भाषा घोषित करने के लिए उसकी प्राचीनता कम से कम 1500 वर्ष होनी चाहिए।
- 3. संस्कृत और तमिल, दोनों को पहली बार शास्त्रीय भाषा का दर्जा एक साथ मिला था।

उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?

A. केवल 1 और 2

B. केवल 2 और 3

C. केवल 1

D. 1, 2 और 3

स्पष्टीकरण:

- भारत में अभी तक 6 भाषाओं को शास्त्रीय भाषा का दर्जा मिला है: तमिल, संस्कृत, कन्नड़, तेलुगु, मलयालम, और उड़िया ।
- शास्त्रीय भाषा के लिए मानदंडों में भाषा की 1500 वष से अधिक प्राचीन साहित्यिक परंपरा होना शामिल है।
- तमिल को सबसे पहले 2004 में और संस्कृत को 2005 में यह दर्जा मिला था।

श्री करतारपुर साहिब कॉरिडोर: एक धार्मिक और कूटनीतिक पहल

हाल की चर्चा क्यों?

- हाल ही में भारत और पाकिस्तान ने श्री करतारपुर साहिब कॉरिडोर पर हस्ताक्षरित समझौते की वैधता को पाँच और वष के लिए बढ़ाने पर सहमति जताई है। यह निर्णय 2019 में किए गए मूल समझौते की समाप्ति के बाद लिया गया है।

करतारपुर साहिब और डेरा बाबा नानक: भौगोलिक स्थिति

- गुरुद्वारा श्री करतारपुर साहिब पाकिस्तान के पंजाब प्रांत के नारोवाल ज़िले में स्थित है।
- यह भारत की सीमा से लगभग 4.5 किलोमीटर दूर है, और रावी नदी के पश्चिमी तट पर बसा है।
- भारत की ओर, गुरदासपुर ज़िले के डेरा बाबा नानक में स्थित गुरुद्वारा डेरा बाबा नानक, रावी नदी के पूर्वी तट पर स्थित है।

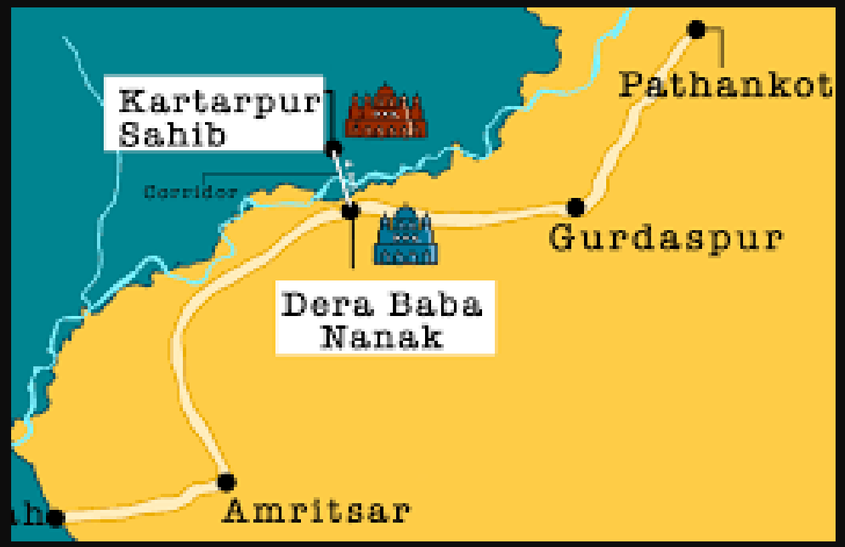

कॉरिडोर समझौते की मुख्य बातें

- प्रारंभिक समझौता अक्टूबर 2019 में हुआ था, जो अब 2024 में नवीनीकृत किया गया है।
- इस समझौते के तहत भारतीय नागरिक और OCI कार्डधारक, बिना वीजा के, गुरुद्वारा दरबार साहिब करतारपुर की यात्रा कर सकते हैं।

- यह यात्रा वर्ष भर, प्रतिदिन उपलब्ध होती है।
- प्रत्येक तीर्थयात्री को उसी दिन भारत वापस लौटना अनिवार्य है।
- पाकिस्तान सरकार, इस यात्रा के लिए प्रत्येक तीर्थयात्री से $20 अमेरिकी डॉलर शुल्क लेती है।
- इस गलियारे के माध्यम से यात्रा करने वाले तीर्थयात्रियों की धार्मिक आस्था पर कोई प्रतिबंध नहीं है।

- हालांकि, पाकिस्तानी नागरिकों को भारत में डेरा बाबा नानक आने की अनुमति नहीं है, जब तक वे भारतीय वीज़ा प्राप्त न करें।

धार्मिक और सांस्कृतिक महत्त्व

- करतारपुर वह स्थान है जहाँ गुरु नानक देव जी ने अपने जीवन के अंतिम 18 वर्ष बिताए थे।

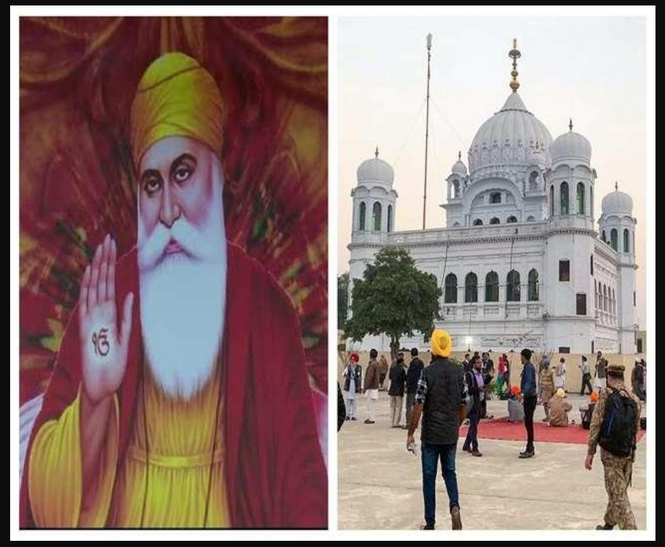

- यहीं उन्होंने सिख धर्म के मूल सिद्धांतों की स्थापना की:
- **किरत करो** – ईमानदारी से मेहनत कर आजीविका कमाना।
- **नाम जपो** – प्रभु का नाम सिमरन करना।
- **वंड छको** – अपना धन और भोजन दूसरों से बाँटना।

- ऐसा माना जाता है कि यहीं उन्होंने गुरु ग्रंथ साहिब के कई शबदों की रचना की थी।
- 'गुरु का लंगर', यानी सामुदायिक रसोई की परंपरा, भी यहीं से प्रारंभ हुई थी।

शांति और कूटनीति का प्रतीक

- यह गलियारा धार्मिक पर्यटन को बढ़ावा देता है और भारत-पाकिस्तान के आम नागरिकों के बीच आपसी समझ को गहरा करता है।
- यह परियोजना दोनों देशों के बीच सांस्कृतिक कूटनीति और शांति प्रयासों का प्रतीक है, जो राजनीतिक तनाव के बावजूद भी जारी है।

Result Mitra